U.G. 6th Semester Examination - 2020

HINDI

Course Code: BHINDSHT6

Course Title: हिंदी संत साहित्य

Full Marks : 40 Time : 2 Hours

The figures in the right-hand margin indicate marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दस** का उत्तर दीजिए : $1\times10=10$

क) 'मैं गुलाम मोहि बेचि गुसाई' किस कवि की पंक्ति है?

ख) हिन्दी सन्त काव्य में 'हंस' का प्रतीकार्थ क्या है?

ग) 'कबीर ग्रंथावली' पुस्तक के रचनाकार का नाम लिखिए।

घ) रैदास के पद किस नाम से प्रसिद्ध है?

ङ) दादू-पंथ के प्रवर्तक कौन है?

च) नामदेव के गुरु कौन थे?

छ) 'हरडेबानी' किसकी रचनाओं का संग्रह है?

ज) 'बिनु देषे उपणै नहीं आसा' किस कवि की पंक्ति है?

झ) किस संत कवि के पद 'निर्गुण बानी' के नाम से प्रसिद्ध है?

ञ) नामदेव की भक्ति किस प्रकार की थी?

ट) 'बोजक' के संपादक का नाम लिखिए।

ठ) संत काव्य का प्रधान रस क्या है?

ड) कबीर का जन्म कहाँ हुआ था?

ढ) संत कवियों में सर्वाधिक सुशिक्षित व शास्त्रज्ञ संत कौन हैं?

ण) दादूदयाल की मृत्यु कहाँ हुई थी?

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** के उत्तर लिखिए : $2\times5=10$

क) संत कवियों की भाषा-शैली क्या थी?

ख) 'संत साहित्य' तथा 'मध्यकालीन साहित्य और सौन्दर्यबोध' के रचनाकारों के नाम लिखिए।

ग) निर्गुण भक्ति में रहस्यवाद का क्या स्थान है?

घ) कबीरदास और रैदास के गुरु कौन थे?

ङ) दादूदयाल किस परंपरा के संत थे? उनके किसी एक शिष्य का नाम लिखिए।

च) 'वाणी का डिक्टेटर' किसके द्वारा किसे कहा गया है?

छ) रैदास किस कवि के समकालीन थे? उनके किसी एक शिष्य का नाम लिखिए।

ज) कबीर के काव्य में निर्गुण किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

3. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×2=10

क) संतौं भाई आई ग्यांन की आंधी रे।

भ्रम की टाटी सभै उड़ानीं माया रहै न बांधी रे।।

दुचिते की दोइ व्यूंनि गिरांनीं मोह बलेंडा टूटा।

त्रिसना छांनि परी धर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा।।

आंधी पाछैं जो जल बरसै तिहिं तेरा जन मीनां।

कहै कबीर मनि भया प्रगासा उदै भानु जब चीन्हा।।

ख) कांइ रे मन विषिया बन जाहिं। देषत ही ठग मूली षांहि।।

मधुभाषी संचियो अपार। मधु लीन्हौ मुष दीन्हीं छार।।

गऊ बछ कौ संयै षीर। गलै बांधि दुहि लेइ अहीर।।

जैसे मीन पानी मैं रहै। काल जाल की सुधि न लहै।।

जिम्या स्वारथ निगल्यौ लोह। कनक कामनी बांध्यौ मोह।।

माया काज बहुत कर्म करै। सो माया ले कुंड धरै।।

अति अयान जानै नहीं मूढ़। धन धरते अचला भयो धूल।।

काम क्रोध त्रिस्ना अति जरै। साध संगति कबूहूँ नाहिं करै।।

प्रणवत नांमदेव ताकी आण। निरभै होइ भजौ किन राम।।

ग) क्यों बिसरै मेरा पवि पियारा।

जीव की जीवन प्राण हमारा।।

क्यौंकर जीवै मीन जल बिधुरें, तुम बिन प्राण सनेही।

चिंतामणि जब करतैं छूटै, तब दुख पावै देही।।

माता बालक दूध न देवै, सो कैसैं करि पीवै।

निरधनका धन अनत भुलाना, सो कैसे करि जीवै।।

बरखहु राम सदा सुख अमिरत, नीझर निरमल धारा।

प्रेम पियाला भर भर दीजै, दादू दास तुम्हारा।।

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर लिखिए : 10×1=10

क) नामदेव की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

ख) कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

ग) रैदास की भाषा शैली पर विचार कीजिए।